1. क्षेत्रीय नृत्य

क्र०सं.	क्षेत्रीय नृत्य	क्षेत्र	पु०/स्त्री०	विवरण
1.	गैर नृत्य	मेवाड़ - बाड़मेर	पुरुषों द्वारा	→ प्रमुख वाद्य :→ ढोल, बांकियाँ थाली। → 'कणाना' बाड़मेर का प्रसिद्ध नृत्य।
2.	घूमर नृत्य "लोकनृत्यों की आत्मा"	मारवाड़ क्षेत्र	महिलाओं द्वारा	→ लोकनृत्यों का सिरमौर। → मांगलिक अवसर पर। → राज० का "राज्य नृत्य"।
3.	अग्नि नृत्य	बीकानेर के कतरियासर गांव	पुरुषों द्वारा	→ जसनाथी सम्प्रदाय के सिद्ध। → नगाड़ा वाद्य यंत्र।
4.	बम नृत्य	भरतपुर-अलवर	पुरुषों द्वारा	→ होली अवसर पर। → बड़ा नगाड़ा (बम) वाद्य यंत्र। → नई फसल आने की प्रसन्नता में।
5.	लांगुरियाँ नृत्य	"करौली" कैला देवी मेले में	मिश्रित युगल	→ ~~किसी भी वाद्ययंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता है~~ → नफीरी व नौबत बजाई जाती।
6.	डांग नृत्य	नाथद्वारा	युगल	→ होली के अवसर पर। → ढोल, मांदल, थाली वाद्य यंत्र।
7.	ढोल नृत्य	जालौर क्षेत्र सांचरियाँ सम्प्र०	पुरुषों द्वारा	→ शादी के अवसर पर। → ढोल का मुखिया "थाकना शैली" में बजाना प्रारम्भ करता है।

Bhim Pathshala

8.	विंदोरी नृत्य	झालावाड़ क्षेत्र	पुरुषों द्वारा	→ गैर नृत्य के समान।
9.	झुमर नृत्य	हाड़ौती क्षेत्र	स्त्रियों द्वारा	→ मांगलिक अवसरों पर डांडियों की सहायता से।
10.	चंग नृत्य	शेखावटी क्षेत्र	पुरुषों द्वारा	→ होली के समय। → वृताकार नृत्य।
11.	गींदड़ नृत्य	शेखावटी क्षेत्र	पुरुषों का नृ.	→ शेखावटी का प्रचलित नृत्य → होली के पूर्व डंडारोपण से प्रारम्भ होकर होली के अन्त तक → विभिन्न स्वांग होते हैं। → दो डण्डों से नगाड़ा बजाया जाता है।
12.	घुडला नृत्य	मारवाड़ (जोधपुर)	महिलाओं द्वारा	→ होली के अवसर पर। → छिद्रित मटके में दीपक रखकर गोलाकार पथ पर बालिकाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य।
13.	खारी नृत्य	मेवात (अलवर)	महिलाओं द्वारा	
14.	लुम्बर नृत्य	जालौर क्षेत्र	महिलाओं द्वारा	→ ढोल, चंग वाद्ययंत्र प्रयोग।
15.	पेजण नृत्य	बाड़मेर क्षेत्र		→ दीपावली अवसर पर।
16.	झाँझी नृत्य	मारवाड़ क्षेत्र	महिलाओं द्वारा	→ छोटे मटकों में छिद्र कर।
17.	डांडिया नृत्य	मारवाड़ क्षेत्र	महि. पुरुषों	→ वृताकार आकृति में (गैर, गींदड़, डांडिया) → शहनाई, नगाड़े वाद्य यंत्र।

Bhim Pathshala

18.	सूकर नृत्य	मेवाड़ क्षेत्र	आदिवासियों द्वारा	→ देवता सूकर की याद में। → मुखौटा लगाकर किया जाने वाला।
19.	गरबा नृत्य	बांसवाड़ा-डूंगरपुर	स्त्रियों द्वारा	–
20.	भैरव नृत्य	ब्यावर में		→ बादशाह-बीरबल की सवारी पर।
21.	नाहर नृत्य	भीलवाड़ा के माण्डल कस्बे	पुरुषों द्वारा	→ होली के तेरस दिन पर रंग-तेरस पर। → इसमें अलग-अलग समाज के चार-पुरुषों द्वारा।

II व्यावसायिक नृत्य

क्र.स.	व्यावसायिक नृत्य	क्षेत्र-विशेष	महिला/पु.	विवरण
1.	भवाई नृत्य	मेवाड़ क्षेत्र में भवाई जाति द्वारा। → उदयपुर संभाग का प्रसिद्ध	मूलतः पुरुषों द्वारा लेकिन वर्त. में महिला	→ पेशेवर लोकनृत्यों में अपनी चमत्कारी के कारण लोकप्रिय। → मुख्य विशेषता → नृत्य अदायगी, शारी. क्रिया, अद्भुत चमत्कार, लयकारी की विविधता। → "रूपसिंह शेखावत प्रसिद्ध भवाई नृत्यकार। →
2.	तेरहताली	→ जैसलमेर, पाली, नागौर	कामड़ जाति महिला मिश्रित युगल	→ बाबा रामदेव की आराधना में। → तेरह मंजीरों से किया जाने वाला। → मांगीबाई + लक्ष्मणदास कामड़ प्रसिद्ध नृत्यकार।

Bhim Pathshala

3.	कच्छी घोड़ी नृत्य	शेखावटी क्षेत्र + कुचामन, परबतसर, डीडवाना।	पुरुष सरगड़े, कुम्हार, ढोली व भांभी जाति प्रवीण।	• विवाह आदि अवसर पर • ढोल, बांकियाँ, थाली वाद्ययंत्र का प्रयोग। • यह कमल के फूल के पैटर्न बनाने की कला के लिए प्रसिद्ध।
4.	सोपी का नृत्य	मेवाड़, मारवाड़	स्त्री	

III जातीय नृत्य

क्र.सं.	जाति	नृत्य	महिला/पु.	विवरण
1.	कालबेलिया जाति	I कालबेलिया	महिलाओं द्वारा	• सपेरा जाति का प्रसिद्ध नृत्य। • पुँगी + चंग वाद्ययंत्र बजाया जाता है। • मारवाड़ में अत्यन्त लोकप्रिय। • 2010 में युनेस्को द्वारा अमूर्त विरासत सूची में शामिल किया।
		II इण्डोणी	स्त्री-पुरुष	• पुँगी + खंजरी पर किया जाने वाला नृत्य। • नर्तक युगल कामुकता का प्रदर्शन करने वाले कपड़े पहनते हैं।
		III शंकरिया	युगल नृत्य	• प्रेमाख्यान नृत्य। • कालबेलियों का सर्वा. लोकप्रिय।
		(IV) पणिहारी	युगल नृत्य	• पणिहारी गीत गाते हैं।
		(V) बागड़ियाँ	महिलाओं द्वारा	• कालबेलियां स्त्री भीख मांगते समय गाती है। • चंग वाद्ययंत्र का प्रयोग।

Brim Pathshala

2.	III गुर्जरों का नृत्य	(i) चरी नृत्य	गुर्जर महिलाओं द्वारा	• मांगलिक अवसर पर। • सिर पर चरी (पीतल का कलश) लेकर किया जाता है। • ढोल, थाली, बांकिया वाद्य यंत्र। • किशनगढ़ के पास गुर्जरों का भी नृत्य लोकप्रिय। • प्रसिद्ध नृत्यांगना - फलकु बाई (किशनगढ़)
		(ii) झुमर नृत्य	पुरुषों द्वारा	• पुरुषों का वीर रस प्रधान। • 'डमरु' वाद्य यंत्र का प्रयोग। •
3.	III मेवों के नृत्य	(i) रणबाजा	युगल	
		(ii) रतवई	स्त्रियों द्वारा	• पुरुष अलगोजा + दमामी बजाते हैं। • सिर पर इण्डोणी व खारी रखकर।
4.	(iv) बादलिया जाति	(i) बादलिया नृत्य		• घुमन्तु जाति बालदिया जाति भाटों द्वारा किया जाने वाला।

IV जनजाति नृत्य

क्र॰ स॰	जनजाति	नृत्य	महिला/पु॰	विवरण
		1. गौर नृत्य	स्त्री-पुरुष	• गणगौर के अवसर पर। • आनुष्ठानिक नृत्य। • 'गौरजा' वाद्य यंत्र का प्रयोग।

Bhim Pathshala

गरासियों के नृत्य	२. वालर नृत्य	मिश्रित	• गरासियों का प्रसिद्ध नृत्य। • किसी भी वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं। • अर्द्ध वृत्त में। • पुरुष एक छाता + तलवार लेकर आरम्भ करता है।
	३. गर्वा नृत्य	स्त्रियाँ	• मोहक नृत्य।
	४. कूद नृत्य	पुरुष-स्त्री	• बिना वाद्यंत्र के पंक्तिबद्ध किया जाने वाला नृत्य। • लय के लिए तालियों का प्रयोग।
	5. जवारा नृत्य	स्त्री-पुरुष	• होली दहन पूर्व। • ढोल के गोर घोष के साथ।
	६. लूर नृत्य	महिलाओं	• वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष से रिश्ते की मांग के समय।
	७. मोरिया नृत्य	पुरुषों	• गणपति स्थापना के बाद रात में।
	8. मांदल नृत्य	महिलाओं द्वारा	• मांगलिक अवसरों पर • थाली + बाँसुरी का प्रयोग।
	९. रायण नृत्य	पुरुषों द्वारा	• मांगलिक अवसरों पर
	१. गवरी (राई)	पुरुषों द्वारा	• भाद्रपद माह – आश्वि. शुक्ल एकादशी • नृत्य नाट्य है। • मेवाड़ में सर्वाधिक प्रचलित। • मुख्य आधार – शिव + भस्मासुर की कथा। • राज. का सबसे प्राचीन लोकनाट्य। • लोकनाट्य का मेरुनाट्य कहा जाता है।

Bhim Pathshala

[2.]	भीलों के नृत्य	2.	भील, मीणों का नेजा नृत्य	महिला-पुरुष दोनों द्वारा	होली के तीसरे दिन खेले जाने वाला। खैरवाड़ा व डूंगरपुर के भील व मीणा में प्रचलित। नारियल प्राप्त करने का प्रयास।
		3.	गैर नृत्य	पुरुषों द्वारा	होली के अवसर पर।
		4.	द्विचकी	महिलाओं द्वारा पुरुषों	मांगलिक अवसर पर।
		5.	घुमरा नृत्य	महिलाओं द्वारा	मांगलिक अवसरों पर। ढोल + थाली की थाप पर।
		6	हाथीमना	भील जनजाति द्वारा।	
		7.	युद्ध नृत्य	राजस्थान के दुर्गम घट्ट पहाड़ी क्षेत्रों में।	
[3]	कथौड़ी	1.	मावलिया नृत्य	पुरुषों द्वारा	नवरात्रि में। ढोलक, टापरा, बांसली, बांसुरी।
		2.	होली नृत्य	महिलाओं द्वारा	कथौड़ी महिलाएँ। पुरुष :- ढोलक, थोरियाँ, पावरी, बांसली पर संगत। होली के अवसर पर।
[4]	सहरिया	1.	स्वांग नृत्य	पुरुषों द्वारा	होली व विशेष अवसरों पर। ढोलक, नगाड़ा, झांझर, डफली, मंजीरा, सिर पर मोरपंख, मुकुट आदि इसकी विशेषता।
		2.	शिकारी नृत्य	पुरुषों द्वारा	शिकार का अभिनय करते हुये किया जाने वाला नृत्य।

Bhim Pathshala

		3.	लहँगी नृत्य	पुरुष प्रधान	
		4.	इन्द्रपुरी	पुरुषों द्वारा	स्वांग के रूप में
		5.	झेला	स्त्री-पुरुष	सामुहिक गायन
		6.	घेडिनी	पुरुष	फाग के अवसर पर
[5]	कंजरों के नृत्य	1.	मछली नृत्य	स्त्री द्वारा	» घूमर का रूप। » दुखान्त नृत्य।
		2.	चकरी/ फुंदी	महिलाओं द्वारा	» बूंदी तीज "कजली तीज" के अवसर। » बूंदी क्षेत्र में। » ढप, ढोलक, मंजीरा » प्रमुख नृत्यांगना :- शांति, फुलवां, फिलमा आदि।
		3.	धाकड़	कंजर लोगों द्वारा	» झाला पाव की विजय की खुशी में। » युद्ध का अभिनय करते हुये।
[6]	मीणा जनजाति	1.	रसिया	स्त्री-पुरुष	» राज्य के पूर्वी जिलों में दौसा, स. माधोपुर, करौली में।
		2.	सुगनी	युगल	» पाली क्षेत्र में। » श्रावण के महीने में। » भिगना व गोदया आदिवासी।

Bhim Pathshala

1. क्षेत्रीय नृत्य

क्र०स०	क्षेत्रीय नृत्य	क्षेत्र	पु०/स्त्री०	विवरण
1.	गैर नृत्य	मेवाड़ - बाड़मेर	पुरुषों द्वारा	→ प्रमुख वाद्य :→ ढोल, बांकियाँ थाली। → 'कणाना' बाड़मेर का प्रसिद्ध नृत्य।
2.	घूमर नृत्य "लोकनृत्यों की आत्मा"	मारवाड़ क्षेत्र	महिलाओं द्वारा	→ लोकनृत्यों का सिरमौर। → मांगलिक अवसर पर। → राज० का "राज्य नृत्य"।
3.	अग्नि नृत्य	बीकानेर के कतरियासर गांव	पुरुषों द्वारा	→ जसनाथी सम्प्रदाय के सिद्ध। → नगाड़ा वाद्य यंत्र।
4.	बम नृत्य	भरतपुर - अलवर	पुरुषो द्वारा	→ होली अवसर पर। → बड़ा नगाड़ा (बम) वाद्य यंत्र। → नई फसल आने की प्रसन्नता में।
5.	लांगुरियाँ नृत्य	करौली कैला देवी मेले पर	मिश्रित युगल	→ ~~किसी भी वाद्ययंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता है~~ → नफीरी व नौबत बजाई जाती।
6.	डांग नृत्य	नाथद्वारा	युगल	→ होली के अवसर पर। → ढोल, मांदल, थाली वाद्य यंत्र।
7.	ढोल नृत्य	जालौर क्षेत्र सांचरियाँ सम्प्र०	पुरुषों द्वारा	→ शादी के अवसर पर। → ढोल का मुखियों "थांकना शैली" में बजाना प्रारम्भ करता है।

Bhim Pathshala

8.	बिंदोरी नृत्य	झालावाड़ क्षेत्र	पुरुषों द्वारा	→ गैर नृत्य के समान।
9.	झुमर नृत्य	हाड़ौती क्षेत्र	स्त्रियों द्वारा	→ मांगलिक अवसरों पर डांडियों की सहायता से।
10.	चंग नृत्य	शेखावटी क्षेत्र	पुरुषों द्वारा	→ होली के समय। → वृताकार नृत्य।
11.	गींदड़ नृत्य	शेखावटी क्षेत्र	पुरुषों का नृ.	→ शेखावटी का प्रचलित नृत्य → होली के पूर्व डंडारोपण से प्रारम्भ होकर होली के अन्त तक → विभिन्न स्वांग होते है। → दो डण्डों से नगाड़ा बजाया जाता है।
12.	घुड़ला नृत्य	मारवाड़ (जोध.)	महिलाओं द्वारा	→ होली के अवसर पर। → छिद्रित मटके में दीपक रखकर गोलाकार पथ पर बालिकाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य।
13.	खारी नृत्य	मेवात (अलवर)	महिलाओं द्वारा	
14.	लुम्बर नृत्य	जालौर क्षेत्र	महिलाओं द्वारा	→ ढोल, चंग वाद्ययंत्र प्रयोग।
15.	पेजण नृत्य	बागड़ क्षेत्र		→ दीपावली अवसर पर।
16.	झाँझी नृत्य	मारवाड़ क्षेत्र	महिलाओं द्वारा	→ छोटे मटकों में छिद्र कर।
17.	डांडिया नृत्य	मारवाड़ क्षेत्र	महि. पुरुषों	→ वृताकार आकृति में (गैर, गींदड, डांडिया) → शहनाई + नगाड़े वाद्य यंत्र।

Bhim Pathshala

18.	सूकर नृत्य	मेवाड़ क्षेत्र	आदिवासियों द्वारा	-> देवता सूकर की याद में। -> मुखौटा लगाकर किया जाने वाला।
19.	गरबा नृत्य	बांसवाड़ा-डूंगरपुर	स्त्रियों द्वारा	-
20.	भैरव नृत्य	ब्यावर में		-> बादशाह-बीरबल की सवारी पर।
21.	नाहर नृत्य	भीलवाड़ा के माण्डल कस्बे	पुरुषों द्वारा	-> होली के तेरस दिन पर रंग-तेरस पर। -> इसमें अलग अलग-अलग समाज के चार-पुरुषों द्वारा।

II व्यावसायिक नृत्य

क्र.सं.	व्यावसायिक नृत्य	क्षेत्र-विशेष	महिला/पु.	विवरण
1.	भवाई नृत्य	मेवाड़ क्षेत्र में भवाई जाति द्वारा। -> उदयपुर संभाग का प्रसिद्ध	मूलतः पुरुषों द्वारा लेकिन वर्त. में महिला	-> पेशेवर लोकनृत्यों में अपनी चमत्कारी के कारण लोकप्रिय। -> मुख्य विशेषता -> नृत्य अदायगी, शारी. क्रिया, अद्भुत चमत्कार, लयकारी की विविधता। -> "रूपसिंह शेखावत प्रसिद्ध भवाई नृत्यकार। ->
2.	तेरहताली	-> जैसलमेर, पाली, नागौर	कामड़ जाति महिला मिश्रित युगल	-> बाबा रामदेव की आराधना में। -> तेरह मंजीरों से किया जाने वाला। -> मांगीबाई + लक्ष्मणदास कामड़ प्रसिद्ध नृत्यकार।

Bhim Pathshala

3.	कच्छी घोड़ी नृत्य	शेखावटी क्षेत्र + कुचामन, परबतसर, डीडवाना।	पुरुष सरगड़े, कुम्हार, ढोली व भांभी जाति प्रवीण।	विवाह आदि अवसर पर ढोल, बांकियाँ, थाली वाद्ययंत्र का प्रयोग। यह कमल के फूल के पैटर्न बनाने की कला के लिए प्रसिद्ध।
4.	सांसी का नृत्य	मेवाड़, मारवाड़	स्त्री	

III जातीय नृत्य

क्र.सं.	जाति	नृत्य	महिला/पु.	विवरण
1.	कालबेलिया जाति	I कालबेलिया	महिलाओं द्वारा	सपेरा जाति का प्रसिद्ध नृत्य। पुँगी + चंग वाद्ययंत्र बजाया जाता है। मारवाड़ में अत्यन्त लोकप्रिय। २०१० में युनेस्को द्वारा अमूर्त विरासत सूची में शामिल किया।
		II इण्डोणी	स्त्री-पुरुष	पुँगी + खंजरी पर किया जाने वाला नृत्य। नर्तक युगल कामुकता का प्रदर्शन करने वाले कपड़े पहनते हैं।
		III शंकरिया	युगल नृत्य	प्रेमाख्यान नृत्य। कालबेलियों का सर्वा. लोकप्रिय।
		(IV) पणिहारी	युगल नृत्य	पणिहारी गीत गाते हैं।
		(V) बागड़ियाँ	महिलाओं द्वारा	कालबेलियां स्त्री भीख मांगते समय गाती है। चंग वाद्ययंत्र का प्रयोग।

Brim Pathshala

2.	गुर्जर क्षेत्र	(i) चरी नृत्य	गुर्जर महिलाओं द्वारा	• मांगलिक अवसर पर। • सिर पर चरी (पीतल का कलश) लेकर किया जाता है। • ढोल, थाली, बांकिया वाद्य यंत्र। • किशनगढ़ के पास गुर्जरों का भी नृत्य लोकप्रिय। • प्रसिद्ध नृत्यांगना - फलकु बाई (किशनगढ़)
		(ii) झुमर नृत्य	पुरुषों द्वारा	• पुरुषों का वीर रस प्रधान। • 'झमुश' वाद्य यंत्र का प्रयोग। •
3.	मेवों के नृत्य	(i) रणबाजा	युगल	
		(ii) रतवई	स्त्रियों द्वारा	• पुरुष अलगोजा + दमामी बजाते हैं। • सिर पर इन्डोणी व खारी रखकर।
4.	(iv) बादलिया जाति	(i) बादलिया नृत्य		• घुमन्तु जाति बालदिया जाति भाटों द्वारा किया जाने वाला।

IV जनजाति नृत्य

क्र० स.	जनजाति	नृत्य	महिला/पु०	विवरण
		1. गौर नृत्य	स्त्री-पुरुष	• गणगौर के अवसर पर। • आनुष्ठानिक नृत्य। • 'गौरजा' वाद्य यंत्र का प्रयोग।

Bhim Pathshala
From :- www.MyGkNotes.com

1.] गरासियों के नृत्य

क्र.	नृत्य	द्वारा	विशेषता
2.	वालर नृत्य	मिश्रित	गरासियों का प्रसिद्ध नृत्य। किसी भी वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं। अर्द्ध वृत में। पुरुष एक छाता + तलवार लेकर प्रारम्भ करता है।
3.	गर्वा नृत्य	स्त्रियाँ	मोहक नृत्य।
4.	कूद नृत्य	पुरुष-स्त्री	बिना वाद्ययंत्र के पंक्तिबद्ध किया जाने वाला नृत्य। लय के लिए तालियों का प्रयोग।
5.	जवारा नृत्य	स्त्री-पुरुष	होली दहन पूर्व। ढोल के घोर घोष के साथ।
6.	लूर नृत्य	महिलाओं	वर पक्ष द्वारा वधू पक्ष से रिश्ते की मांग के समय।
7.	मोरिया नृत्य	पुरुषों	गणपति स्थापना के बाद रात में।
8.	मांदल नृत्य	महिलाओं द्वारा	मांगलिक अवसरों पर। थाली + बाँसुरी का प्रयोग।
9.	रायण नृत्य	पुरुषों द्वारा	मांगलिक अवसरों पर
1.	गवरी (राई)	पुरुषों द्वारा	भाद्रपद माह — आश्वि. शुक्ल एकादशी। नृत्य नाट्य है। मेवाड़ में अत्यधिक प्रचलित। मुख्य आधार - शिव + भस्मासुर की कथा। राज. का सबसे प्राचीन लोकनाट्य। लोकनाट्य का मेरुनाट्य कहा जाता है।

Bhim Pathshala
PDF Download From :- www.MyGKNotes.com

		२. भील, मीणों का नेजा नृत्य	महिला-पुरुष दोनों द्वारा	• होली के तीसरे दिन खेले जाने वाला। • खेरवाड़ा व डूँगरपुर के भील व मीणा में प्रचलित। • नारियल प्राप्त करने का प्रयास।
[2.]	भीलों के नृत्य	३. गैर नृत्य	पुरुषों द्वारा	• होली के अवसर पर।
		४. द्विचक्री	महिलाओं द्वारा पुरुषों	• मांगलिक अवसर पर।
		५. घूमरा नृत्य	महिलाओं द्वारा	• मांगलिक अवसरों पर। • ढोल + थाली की थाप पर।
		६. हाथीमना	मीन जनजाति द्वारा।	
		७. युद्ध नृत्य	राजस्थान के दुर्गम एवं पहाड़ी क्षेत्रों में।	
[3]	कथौड़ी	१. मावलिया नृत्य	पुरुषों द्वारा	• नवरात्रि में। • ढोलक, तापरा, बांसली, बाँसुरी।
		२. होली नृत्य	महिलाओं द्वारा	• कथौड़ी महिलाऐं। • पुरुष :- ढोलक, थोरियाँ, पावरी, बांसली पर संगत। • होली के अवसर पर।
[4]	सहरिया	१. स्वांग नृत्य	पुरुषों द्वारा	• होली व विशेष अवसरों पर। • ढोलक, नगाड़ा, झांझर, डफली, मंजीरा, सिर पर मोरपंख, मुकुट आदि इसकी विशेषता।
		२. शिकारी नृत्य	पुरुषों द्वारा	• शिकार का अभिनय करते हुये किया जाने वाला नृत्य।

Bhim Pathshala
www.MyGkNotes.com

	3.	लँहगी नृत्य	पुरुष प्रधान	
	4.	इन्द्रपुरी	पुरुषों द्वारा	स्वांग के रूप में
	5.	झेला	स्त्री-पुरुष	सामुहिक गायन
	6.	वेडिनी	पुरुष	फाग के अवसर पर
[5] कंजरों के नृत्य	1.	मछली नृत्य	स्त्री द्वारा	» घुमर का रूप। » दुखान्त नृत्य।
	2.	चकरी / फुँदी	महिलाओं द्वारा	» बुंदी तीज "कजली तीज" के अवसर। » बुंदी क्षेत्र में। » ढ़प, ढोलक, मंजीरा » प्रमुख नृत्यांगना :- शांति, फुलवां, फिलांमा आदि।
	3.	धाकड़	कंजर लोगों द्वारा	» झाला पाव की विजय की खुशी में। » युद्ध का अभिनय करते हुये।
[6] मीणा जनजाति	1.	रसिया	स्त्री-पुरुष	» राज्य के पूर्वी जिलों में दौसा, स. माधोपुर, करौली में।
	2.	सुगनी	युगल	» पाली क्षेत्र में। » श्रावण के महीने में। » भिमाला व गोदवा आदिवासी।

Bhim Pathshala

PDF Download From :- www.MyEXAMnotes.com